न्यूज़ टुडे

विश्व की पहली व्यक्तिगत जीन एडिटिंग थेरेपी का इस्तेमाल एक दुर्लभ बीमारी के इलाज के लिए किया गया

संयुक्त राज्य अमेरिका में वैज्ञानिकों ने पहली बार गंभीर बीमारी से ग्रसित एक बच्चे के इलाज के लिए व्यक्तिगत **CRISPR-आधारित जीन-एडिटिंग थेरेपी** का सफलतापूर्वक इस्तेमाल किया। यह बच्चा **CPS1 डेफिशियेंसी** नामक एक दुर्लभ आनुवंशिक विकार से पीड़ित था।

- **CPS1 डेफिशियेंसी** एक आनुवंशिक विकार है, जिसमें **लीवर प्रोटीन चयापचय से उपोत्पादों को तोड़ने में संघर्ष** करता है। इसके परिणामस्वरूप रक्त में **विषाक्त अमोनिया का निर्माण** होता है।

जीन एडिटिंग थेरेपी क्या है?

- यह **आनुवंशिक इंजीनियरिंग** (Genetic engineering) से संबंधित है, जिसमें **जीवों के डीएनए को मॉडिफाई करने की प्रक्रिया** शामिल है। इसमें **आनुवंशिक दोषों को ठीक करना, जीन एक्सप्रेशन को बदलना या नई आनुवंशिक सामग्री को शामिल** करना शामिल है।
  - उपचार की यह विधि **सिकल सेल एनीमिया, सिस्टिक फाइब्रोसिस और कुछ विशेष प्रकार कैंसर** के इलाज की संभावना प्रदान करती है।
- **डीएनए में मुख्यतः दो प्रकार के मॉडिफिकेशन होते हैं:**
  - **सोमैटिक जीन एडिटिंग:** यह एक ऐसी तकनीक है, जिसमें **गैर-प्रजनन (सोमैटिक) कोशिकाओं (जैसे- त्वचा, यकृत या रक्त कोशिकाओं) के डीएनए को संपादित** किया जाता है। इसका अर्थ है कि इन कोशिकाओं में जीन को बदला जाता है, ताकि किसी व्यक्ति में विशिष्ट ऊतकों या अंगों को प्रभावित करने वाली बीमारी या स्थिति का इलाज किया जा सके।
    - **जीन में परिवर्तन केवल उपचारित व्यक्ति तक ही सीमित होते है** और संतानों में नहीं जाते हैं।
  - **जर्मलाइन जीन एडिटिंग:** इसमें **रिप्रोडक्टिव (प्रजनन) कोशिकाओं (शुक्राणु व अंडे) या प्रारंभिक अवस्था के भ्रूण के डीएनए को संपादित** करना शामिल है, जिससे उस भ्रूण से विकसित होने वाले व्यक्ति की सभी कोशिकाएं प्रभावित होती हैं।
    - **परिवर्तन वंशानुगत** होते हैं यानी भविष्य की पीढ़ियों को हस्तांतरित होते हैं। ऐसा इस कारण, क्योंकि यह **सोमैटिक और रिप्रोडक्टिव कोशिकाओं** (Somatic & Reproductive cells) **सहित संपूर्ण जीव की आनुवंशिक संरचना को बदल** देती है।

डीएनए एडिटिंग

CRISPR/ Cas9 नामक डीएनए एडिटिंग तकनीक में डीएनए में एक विशिष्ट स्थान को खोजा जाता है और फिर उस स्थान को एडिट किया जाता है, ठीक उसी तरह जैसे आप एक वर्ड-प्रोसेसिंग प्रोग्राम में "फाइंड एंड रिप्लेस" फ़ंक्शन का उपयोग करते हैं।

तकनीक कैसे काम करती है?

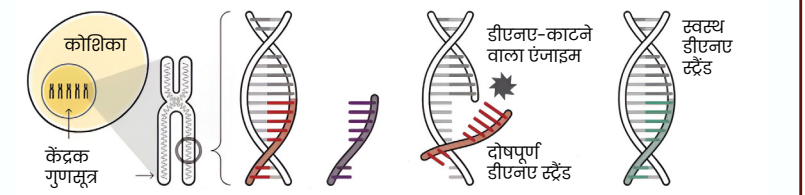

एक कोशिका को एक एंजाइम कॉम्प्लेक्स से ट्रांसफेक्टेड किया जाता है, जिसमें शामिल है:

- गाइड अणु
- स्वस्थ डीएनए प्रतिलिपि
- डीएनए-काटने वाला एंजाइम

एक विशेष रूप से डिजाइन किया गया सिंथेटिक गाइड अणु टारगेट डीएनए स्ट्रैंड को खोजता है।

एक एंजाइम टारगेट डीएनए स्ट्रैंड को काट देता है।

दोषपूर्ण डीएनए स्ट्रैंड को एक स्वस्थ प्रतिलिपि के साथ बदल दिया जाता है

- **जीन एडिटिंग किस प्रकार की जाती है: (चित्र देखें)**
- **प्रयुक्त उपकरण: CRISPR-Cas9** (लक्षित स्थानों पर DNA को काटने के लिए गाइड RNA और Cas9 न्यूक्लियस का उपयोग करता है); **जिंक फिंगर न्यूक्लियस (ZFNs); TALENs,** आदि।

भारत ने पर्वतीय पारिस्थितिकी-तंत्र की सुरक्षा हेतु "वैश्विक कार्रवाई के लिए पांच सूत्रीय आह्वान" प्रस्तुत किया

भारत ने **"वैश्विक कार्रवाई के लिए पांच सूत्रीय आह्वान" (Five-point call for Global Action)** नेपाल की राजधानी **काठमांडू** में आयोजित **पहले सागरमाथा संवाद** में प्रस्तुत किया। यह संवाद **'जलवायु परिवर्तन, पर्वत और मानवता का भविष्य'** थीम पर आयोजित किया गया था।

- इस 'संवाद' का नाम **विश्व की सबसे ऊँची चोटी सागरमाथा (माउंट एवरेस्ट) के नाम पर** रखा गया है।
- भारत ने इस संवाद में **हिमालय और अन्य पर्वतीय पारिस्थितिकी-तंत्रों के संरक्षण हेतु सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता** पर बल दिया।

हिमालयी पारिस्थितिकी-तंत्र के संरक्षण की आवश्यकता क्यों हैं?

- हिमालय लगभग 1.3 अरब लोगों को आजीविका प्रदान करता है,
- यह वन आवरण प्रदान करता है,
- हिमालय बारहमासी नदियों के जल का स्रोत है,
- यह जैव विविधता के संरक्षण में योगदान देता है, आदि।

हिमालयी पारिस्थितिकी-तंत्र की साझी चुनौतियों से निपटने के लिए 'वैश्विक कार्रवाई के पांच सूत्रीय आह्वान' में निम्नलिखित शामिल हैं:

- **वैज्ञानिक सहयोग में वृद्धि:** इसमें अनुसंधान में सहयोग, क्रायोस्फेरिक (हिमावरण) में परिवर्तनों की निगरानी, जलचक्र की निगरानी और जैव विविधता संरक्षण क्षेत्र में सहयोग शामिल हैं।
- **जलवायु परिवर्तन के अनुकूल ढलना:** इसमें हिमनदीय झील के टूटने से उत्पन्न बाढ़ (GLOF) जैसी आपदाओं के लिए प्रारंभिक-चेतावनी प्रणाली में निवेश, पर्वतीय क्षेत्रों में जलवायु-अनुकूल अवसंरचनाओं का विकास आदि शामिल हैं।
- **पर्वतीय समुदायों को सशक्त बनाना:** इसमें स्थानीय समुदायों की भलाई, उनकी आवश्यकताओं और आकांक्षाओं को नीतिगत निर्णयों के केंद्र में रखना तथा साथ ही, उन्हें हरित आजीविका के अवसर प्रदान करना एवं संधारणीय पर्यटन का लाभ दिलाना शामिल हैं।
- **ग्रीन-फाइनेंस उपलब्ध कराना:** जलवायु परिवर्तन के प्रति अनुकूलन और शमन रणनीतियों को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए पर्वतीय देशों को UNFCCC तथा पेरिस समझौते के तहत जलवायु वित्त-पोषण उपलब्ध कराना चाहिए।
- **पर्वतीय स्थिति के नजरिए को स्वीकार करना:** पर्वतीय पारिस्थितिकी-तंत्रों के विशिष्ट योगदानों और संकटों को **वैश्विक जलवायु वार्ताओं एवं सतत विकास एजेंडा में उचित स्थान दिलाना** चाहिए।

हिमालय पर्वतीय पारिस्थितिकी-तंत्र के संरक्षण हेतु उठाए गए कदम:

- **नेशनल मिशन ऑन सस्टेनिंग हिमालयन इकोसिस्टम:** इसे **राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन कार्य योजना (NAPCC)** के तहत शुरू किया गया है।
- **सिक्योर हिमालय प्रोजेक्ट:** यह **"सतत विकास के लिए वन्यजीव संरक्षण और अपराध रोकथाम पर वैश्विक साझेदारी"** का हिस्सा है। इस साझेदारी को **ग्लोबल वाइल्डलाइफ प्रोग्राम** भी कहा जाता है।
- **अंतर्राष्ट्रीय एकीकृत पर्वतीय विकास केंद्र (ICIMOD):** यह **हिंदुकुश हिमालय (HKH)** क्षेत्र में रहने वाले लोगों की सेवा में कार्यरत एक अंतर-सरकारी ज्ञान और शिक्षण केंद्र है।

विशाल सौर विस्फोट ("बर्ड-विंग" इवेंट) पृथ्वी को प्रभावित कर सकता है

NASA के उपग्रहों ने एक **विशाल सोलर फ्लेयर** का पता लगाया है। इसमें सूर्य से अति गर्म प्लाज्मा निकल रहा है, जो नाटकीय **"बर्ड-विंग"** आकार में फैल रहा है।

सोलर फ्लेयर्स (सौर ज्वालाएं) क्या है?

- **परिभाषा:** सौर ज्वालाएं **सूर्य पर होने वाले विशाल विस्फोट** हैं। इनसे **ऊर्जा, प्रकाश और उच्च गति वाले कण अंतरिक्ष में मुक्त** होते हैं।
  - इन ज्वालाओं को अक्सर **सौर चुंबकीय तूफानों से** जोड़कर देखा जाता है। इन तूफानों को **कोरोनल मास इजेक्शन (CMEs)** कहा जाता है।
    - **कोरोनल मास इजेक्शन:** यह सूर्य की **सबसे बाहरी परत कोरोना से प्लाज्मा और चुंबकीय क्षेत्र का बड़े पैमाने पर उत्सर्जन** है।

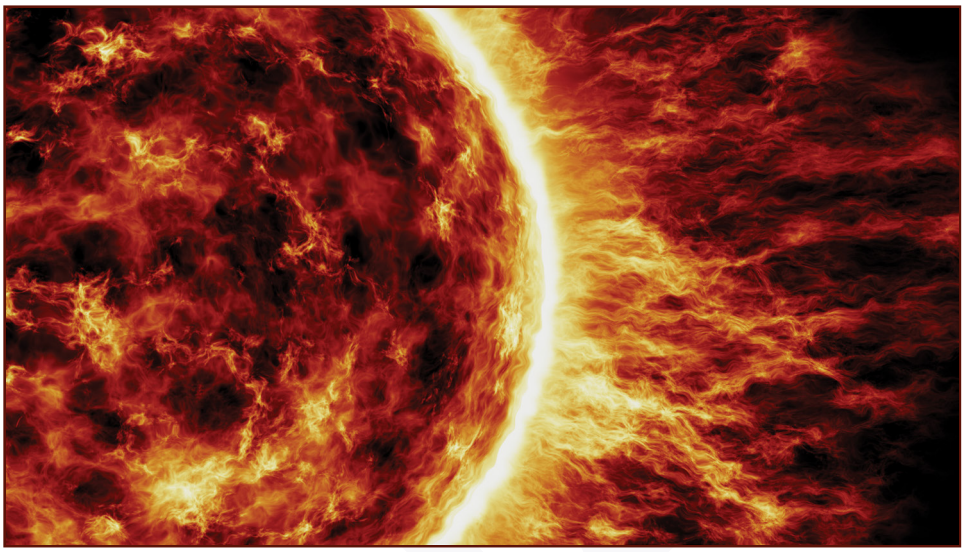

- **वर्गीकरण:** इन्हें इनकी **प्रबलता के आधार पर** वर्गीकृत किया जाता है। **सबसे कम प्रबल सोलर फ्लेयर्स को A-श्रेणी** में वर्गीकृत किया जाता है। इससे अधिक प्रबल सोलर फ्लेयर्स श्रेणियां क्रमशः B, C, M और X हैं। **X सोलर फ्लेयर्स सर्वाधिक प्रबल** होती हैं।
- **आवृत्ति: सोलर मैक्सिमम** के दौरान सोलर फ्लेयर्स की घटनाएं अधिक होती हैं।
  - सौर चक्र की मध्य अवधि **सोलर मैक्सिमम (सौर चक्र की पीक अवधि)** होती है। इस दौरान **सूर्य में सबसे अधिक सनस्पॉट्स** होते हैं।
  - सौर चक्र वह साइकिल है, जिससे सूर्य का चुंबकीय क्षेत्र लगभग **प्रत्येक 11 साल में गुजरता** है। प्रत्येक सौर चक्र की पीक अवधि के दौरान **सूर्य के चुंबकीय क्षेत्र का ध्रुव बदलता** है। इसका अर्थ है कि सूर्य के उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव अपनी जगह बदल लेते हैं।
- सोलर फ्लेयर्स **विद्युत चुम्बकीय स्पेक्ट्रम** में विकिरण जैसे- **एक्स-किरणें, गामा किरणें, पराबैंगनी प्रकाश, दृश्य प्रकाश, रेडियो तरंगें** आदि उत्सर्जित करते हैं।

सोलर फ्लेयर्स घटनाओं के निहितार्थ

- **भू-चुंबकीय तूफान:** ये फ्लेयर्स पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र में गड़बड़ी ला सकती हैं। इस वजह से **रेडियो ब्लैकआउट, पावर ग्रिड की विफलता और ऑरोरा** की घटनाएं हो सकती हैं।
- **सैटेलाइट क्षति:** उच्च ऊर्जा वाले कण **सैटेलाइट्स के इलेक्ट्रॉनिक्स को नुकसान पहुंचा सकते हैं; GPS सिस्टम में गड़बड़ी कर सकते हैं और संचार नेटवर्क में रुकावट** डाल सकते हैं।
- **मानव सुरक्षा:** पृथ्वी पर लोगों को सीधे नुकसान नहीं होता, क्योंकि **पृथ्वी का चुंबकीय क्षेत्र और वायुमंडल हमें बचाते** हैं। यद्यपि **अंतरिक्ष यात्रियों और स्पेस मिशन** को विकिरण के कारण खतरा हो सकता है।

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान (IIFT) का पहला विदेशी कैंपस दुबई में स्थापित होगा

यह कदम **राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP), 2020 के उस विजन के अनुरूप** है, जिसमें भारत में **उच्चतर शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीयकरण और देश में वैश्विक शिक्षण संस्थानों के केंद्रों की स्थापना** पर बल दिया गया है।

- भारतीय विदेश व्यापार संस्थान (IIFT) **"डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी"** है। इसकी स्थापना **1963 में वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के अधीन एक स्वायत्त संस्था** के रूप में की गई थी। इस संस्था का उद्देश्य **भारत के विदेश व्यापार क्षेत्रक के लिए कौशल निर्माण में योगदान** देना है।

भारत में 'उच्चतर शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीयकरण' के बारे में:

- **राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020** में निम्नलिखित दो प्रमुख तरीकों से **उच्चतर शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीयकरण का उल्लेख किया गया है:**
  - **भारतीय उच्चतर शिक्षा संस्थानों (HEIs) द्वारा विदेशों में अपना कैंपस स्थापित** करना। जैसे कि **IIT मद्रास ने तंज़ानिया में अपना कैंपस शुरू** किया है।
  - **विदेशी उच्चतर शिक्षा संस्थानों द्वारा भारत में अपना कैंपस स्थापित** करना। जैसे कि **ऑस्ट्रेलिया की डीकिन यूनिवर्सिटी ने गुजरात की GIFT सिटी में अपना पहला कैंपस** शुरू किया है।

भारत के लिए 'उच्चतर शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीयकरण' का महत्त्व:

- **शिक्षा और अनुसंधान की गुणवत्ता में सुधार होगा:** विदेशी शिक्षण संस्थानों के सहयोग से भारत में **अनुसंधान, पेटेंट आवेदन और शैक्षिक मानकों में सुधार** होगा। साथ ही, **फैकल्टी का भी आदान-प्रदान** होगा और **वित्त-पोषण में भी वृद्धि** होगी।
- **विदेशी मुद्रा अर्जित होगी और इसकी बचत होगी:** 2022 में लगभग **13 लाख भारतीय विद्यार्थी** संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया तथा कुछ **अन्य देशों में अध्ययन** कर रहे थे।
- **भविष्य के लिए आवश्यक कौशल प्राप्त होगा और रोजगार प्राप्ति की संभावनाएं बढ़ेंगी:** अलग-अलग संस्कृतियों के लोगों से **संवाद कौशल बढ़ेगा**। साथ ही, **विश्व के संस्थानों के सर्टिफिकेट्स** होने से विद्यार्थियों को उच्च मांग वाले रोजगार के लिए तैयार किया जा सकेगा।
- **सॉफ्ट पावर:** भारत की सांस्कृतिक विरासत का प्रदर्शन देश का सांस्कृतिक प्रभाव बढ़ाएगा और **कूटनीति को मजबूती** प्रदान करेगा।

उच्चतर शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीयकरण के समक्ष चुनौतियां:

- **जटिल नियम-कानून:** विदेशी विश्वविद्यालयों द्वारा **भारत में कैंपस शुरू करने के लिए मंजूरी की प्रक्रियाएं काफी जटिल** हैं। साथ ही, विदेशी विश्वविद्यालयों के **भारत में कैंपस पर कई तरह के प्रतिबंध** लगाए गए हैं। ये दोनों चुनौतियां साझेदारी में बाधा उत्पन्न करती हैं।
  - एक संसदीय समिति की हालिया रिपोर्ट के अनुसार, **अभी तक किसी भी शीर्ष आइवी लीग संस्थान ने भारत में अपना कैंपस स्थापित नहीं** किया है।
- **संस्कृति और भाषा संबंधी बाधाएं:** कुछ संस्थानों में **अन्य नृजातीय समूहों या संस्कृतियों के साथ शिक्षा के लिए प्रशिक्षण और अंग्रेजी भाषा की दक्षता** की कमी है। इससे विदेशी संस्थानों के साथ जुड़ने में समस्या आ सकती है।
- **भारतीय उच्चतर शिक्षण संस्थानों पर प्रभाव:** विदेशी उच्चतर शिक्षण संस्थानों के आकर्षक वेतन भारतीय उच्चतर शिक्षण संस्थानों से अच्छी फैकल्टी के पलायन का कारण बन सकता है।

PRS रिपोर्ट में राज्य विधान-सभाओं के कामकाज में तीव्र गिरावट का उल्लेख किया गया

रिपोर्ट के मुख्य बिंदुओं पर एक नजर

- **बैठकों के औसत दिनों में गिरावट:** 2017 में औसतन 28 बैठकें होती थीं, जो 2024 में घटकर 20 रह गई। 11 राज्यों ने अनुच्छेद 174 के अंतर्गत 1 या 2 दिन तक चलने वाले **छोटे सत्रों के माध्यम से औपचारिकता** पूरी की है।
  - **अनुच्छेद 174** के अनुसार, राज्य विधान-मंडल की बैठक **6 महीनों में कम-से-कम एक बार होना** आवश्यक है।
  - **संविधान समीक्षा समिति** ने सुझाव दिया था कि छोटे विधान-मंडलों (**70 से कम सदस्य**) **के लिए साल में कम-से-कम 50 और बड़े विधान-मंडलों के लिए 90 बैठकें** होनी चाहिए।
- **सीमित चर्चाएं:** 2024 में राज्यों ने **औसतन 17 विधेयक पारित** किए थे। इनमें से **51% विधेयक उसी दिन पारित कर दिए गए जिस दिन** पेश किए गए थे।
  - 2024 में पारित विधेयकों में से **केवल 4% को ही विस्तृत जांच के लिए समिति** के पास भेजा गया था।
- **अध्यक्ष और उपाध्यक्ष की अनुपस्थिति (अनुच्छेद 178):** अप्रैल 2025 तक, 8 राज्यों/ केंद्र शासित प्रदेशों की विधान-सभा में कोई उपाध्यक्ष नहीं था। झारखंड विधान-सभा में 20 से अधिक वर्षों से उपाध्यक्ष का चुनाव नहीं हुआ है।
- **विधेयकों पर स्वीकृति में देरी:** 2024 में, 18% विधेयकों को स्वीकृति मिलने में 3 महीनों से अधिक का समय लगा था। उदाहरण के लिए- हिमाचल प्रदेश में 72% विधेयक विलंबित हुए थे।
  - **अनुच्छेद 200** के तहत राज्यपाल को विधेयकों पर बिना अनावश्यक देरी के सहमति देने, पुनर्विचार हेतु लौटाने या राष्ट्रपति के लिए आरक्षित रखने का प्रावधान किया गया है।

परिणाम

- **जल्दबाजी में कानून बनाना:** चर्चा की कमी से कमजोर, अस्पष्ट या खराब तरीके से लागू होने वाले कानून बनते हैं।
- **लोकतांत्रिक कमी:** पारदर्शिता की कमी और सीमित चर्चा से लोगों का विधायी संस्थाओं एवं लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं पर विश्वास कमजोर हो सकता है।
- **शासन संबंधी खामियां:** विधेयकों में देरी या कमजोर कानूनों से नीतियों में असंगतता, भ्रम और सेवा वितरण में समस्या उत्पन्न हो सकती हैं।

अन्य सुर्ख़ियां

हुदैदा और अल-सलीफ बंदरगाह

इजरायल ने **यमन में हूती विद्रोहियों के नियंत्रण वाले हुदैदा और अल-सलीफ बंदरगाहों पर हमला** किया।

हुदैदा और अल-सलीफ बंदरगाहों के बारे में

- **अवस्थिति:** पश्चिमी यमन में **लाल सागर के तट** पर।
- **महत्त्व:** रास इस्सा और हुदैदा एवं सलीफ बंदरगाह से होकर यमन का लगभग **70% आयात होता है तथा उसे 80% मानवीय सहायता प्राप्त** होती है।

राजों की बावली

राजों की बावली को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) ने **वर्ल्ड मॉन्यूमेंट्स फंड इंडिया के साथ मिलकर संरक्षित** किया है।

राजों की बावली के बारे में

- यह एक **चार-स्तरीय (चार मंजिला) सीढ़ीदार बावली** है। इसका निर्माण **लोधी काल** में पेयजल और खाना पकाने के जल को संग्रहित करने के लिए किया गया था।
- **अवस्थिति: महरौली पुरातत्व पार्क** (नई दिल्ली) में।
- **निर्माणकर्ता:** सिकंदर लोधी के दरबार के **एक अमीर दौलत खान ने 1506 ई.** में करवाया था।
- **स्थापत्य कला शैली:** इंडो-इस्लामिक।

पीएम ई-ड्राइव योजना (PM E-Drive)

कर्नाटक सरकार ने **'प्रधान मंत्री इलेक्ट्रिक ड्राइव रिवोल्यूशन इन इनोवेटिव व्हीकल एन्हांसमेंट (PM E-DRIVE/ पीएम ई-ड्राइव)'** योजना के तहत इलेक्ट्रिक बसों की मांग की है।

पीएम ई-ड्राइव योजना के बारे में

- **शुरुआत:** 2024 में।
- **कार्यान्वयन मंत्रालय:** भारी उद्योग मंत्रालय।
- **उद्देश्य:** भारत में इलेक्ट्रिक वाहनों (EVs) को तेज़ी से अपनाना, चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर की स्थापना करना और इलेक्ट्रिक वाहन विनिर्माण इको-सिस्टम का विकास करना।
- **योजना अवधि:** 2 वर्ष (2024 से 2026) तक।
- **योजना के घटक:**
  - **सब्सिडी:** इलेक्ट्रिक-दोपहिया, तिपहिया, एंबुलेंस, ट्रक और अन्य नई EV श्रेणी के वाहनों के लिए मांग आधारित प्रोत्साहन।
  - **पूंजीगत परिसंपत्तियों के निर्माण के लिए अनुदान:** इलेक्ट्रिक बसें, चार्जिंग स्टेशनों के नेटवर्क की स्थापना आदि।

ट्विस्टर (Twister)

संयुक्त राज्य अमेरिका में "ट्विस्टर" नामक विशाल मौसमी परिघटना का अवलोकन किया गया।

ट्विस्टर क्या है?

- संयुक्त राज्य अमेरिका में "ट्विस्टर" **टॉरनेडो (चक्रवात) का दूसरा नाम** है। ये **अत्यधिक तीव्र गति (लगभग 250 मील प्रति घंटा) से घूमने वाले, कीप (funnel) के आकार के वायु स्तंभ** होते हैं। ये **प्रबल गर्जन वाले बादलों के साथ जमीन पर उतरते** हैं।
- **निर्माण प्रक्रिया:** ट्विस्टर्स तब बनते हैं जब आर्द्र और गर्म हवा, शुष्क व ठंडी हवा से टकराती है। इससे **वायुमंडल में अस्थिरता और तड़ित-झंझा (thunderstorm) के भीतर तीव्र उर्ध्वगामी धाराएं** बनती हैं।
  - इससे **वायुमंडलीय कतरनी (wind shear) उत्पन्न** होती है, जो **हवा को घुमाती** है। जब यह घूर्णन ऊर्ध्वाधर (वर्टिकली) दिशा में झुकता है और प्रबल वेग धारण करता है, तो **टॉरनेडो (या ट्विस्टर)** का निर्माण होता है।
- इनमें से अधिकतर ट्विस्टर्स मेक्सिको **की खाड़ी के आसपास उत्पन्न** होते हैं, क्योंकि **यह आर्द्रता का एक बड़ा स्रोत** है।

फॉरेस्ट क्लीयरेंस

सुप्रीम कोर्ट ने राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को **वन भूमि के अन्य गतिविधियों के लिए दुरुपयोग** के मामलों की जांच हेतु **विशेष जांच दल (SITs) गठित करने का निर्देश** दिया।

- फॉरेस्ट क्लीयरेंस से आशय है **किसी अन्य उद्देश्य से वन भूमि के उपयोग की मंजूरी** देना।

वन संरक्षण अधिनियम, 1980 के अनुसार फॉरेस्ट क्लीयरेंस की प्रक्रिया:

- **चरण I – सैद्धांतिक मंजूरी:** प्रतिपूरक वनीकरण के लिए निधि आवंटन जैसी **कुछ शर्तें पूरी होने पर प्रारंभिक मंजूरी** दी जाती है।
- **चरण II – अंतिम मंजूरी:** राज्य सरकार द्वारा चरण I की सभी शर्तों का पालन करने की पुष्टि के बाद दी जाती है।
- **स्वीकृति देने वाली अथॉरिटी:**
  - 5 हेक्टेयर तक की परियोजनाओं (खनन को छोड़कर) के लिए, **क्षेत्रीय कार्यालय के मुख्य वन संरक्षक द्वारा** मंजूरी दी जाती है।
  - 5 हेक्टेयर से अधिक में फैली परियोजनाओं या किसी भी खनिज खनन प्रस्ताव के लिए, **वन सलाहकार समिति की सिफारिश पर पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय** द्वारा स्वीकृति दी जाती है।

भारतीय याक

पहली बार भारतीय याक के गुणसूत्र-स्तर के जीनोम को चार ICAR संस्थानों के विशेषज्ञों द्वारा संकलित किया गया।

भारतीय याक के बारे में

- भारतीय याक (बोस ग्रुन्नियन्स) को **'हिमालय का जहाज'** भी कहा जाता है। यह **ऊंचाई वाले क्षेत्रों में रहने वाले समुदायों को मांस, दूध और परिवहन** की सुविधा प्रदान करता है।
- **पर्यावास:** यह **हिमालयी क्षेत्र, तिब्बती पठार, पामीर पर्वत, ताजिकिस्तान, मंगोलिया और साइबेरिया** तक पाया जाता है।
- **विशेषताएं:**
  - याक के **फेफड़े और हृदय** उन मवेशियों की तुलना में **बड़े** होते हैं, जो कम ऊंचाई पर पाए जाते हैं।
  - **आहार:** ये **शाकाहारी** होते हैं और मुख्य रूप से **घास एवं पर्वतीय पौधों** पर निर्भर रहते हैं।

मल्टी-एजेंसी सेंटर

केंद्रीय गृह मंत्री ने **नई दिल्ली में एम्बेडेड AI/ ML तकनीकों के साथ एक नए और संशोधित MAC** का उद्घाटन किया।

MAC के बारे में

- यह **इंटेलिजेंस ब्यूरो (IB) के अधीन एक साझा आतंकवाद-रोधी ग्रिड** है। इसे **2001 में कारगिल युद्ध के बाद चालू** किया गया था।
- यह **भारत के द्वीपीय क्षेत्रों, उग्रवाद पीड़ित क्षेत्रों और उच्च ऊंचाई वाले क्षेत्रों को जोड़ता** है, जिससे जिला-स्तर तक कनेक्टिविटी भी सुनिश्चित होती है।
- इसमें **28 संगठनों** की भागीदारी है, जिनमें **रिसर्च एंड एनालिसिस विंग (R&AW), सशस्त्र बल और राज्य पुलिस** शामिल हैं। ये **रीयल-टाइम में खुफिया जानकारी साझा** करते हैं।

पोलियो (पोलियोमाइलाइटिस)

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने **पापुआ न्यू गिनी में पोलियो के प्रकोप की घोषणा** की

- गौरतलब है कि पापुआ न्यू गिनी को **वर्ष 2000 में पोलियो मुक्त घोषित** किया गया था।

पोलियो के बारे में

- यह **वायरस से फैलने वाला अत्यधिक संक्रामक** रोग है। यह बीमारी **तंत्रिका तंत्र पर हमला करती है और पूर्ण पक्षाघात (लकवा)** का कारण बन सकती है।
- **संक्रमण का तरीका:** व्यक्ति से व्यक्ति में, फेकल-ओरल रूट से, दूषित जल या भोजन के सेवन से।
- यह **वायरस आंतों में कई गुना** बढ़ जाता है।
- **प्रारंभिक लक्षण:** बुखार, थकान, सिरदर्द, उल्टी, गर्दन में अकड़न और अंगों में दर्द।
- पोलियो मुख्यतः **5 वर्ष से कम आयु के बच्चों को संक्रमित** करता है।
- **पोलियो के खिलाफ दो प्रकार के टीके उपलब्ध हैं:**
  - ओरल पोलियो वैक्सीन, और
  - इनएक्टिवेटेड पोलियो वैक्सीन।
- **भारत को वर्ष 2014 में आधिकारिक रूप से पोलियो मुक्त घोषित** किया गया था।

सुर्ख़ियों में रहे स्थल

होंडुरास (राजधानी: टेगुसिगाल्पा)

- होंडुरास ने **दिल्ली में अपना एक दूतावास** खोला।

राजनीतिक सीमाएं:

- **अवस्थिति:** मध्य अमेरिका।
- **भूमि सीमाएं:** इसके पश्चिम में **ग्वाटेमाला और अल साल्वाडोर** तथा दक्षिण एवं पूर्व में **निकारागुआ** स्थित है।
- **आसपास के जल निकाय:** इसके उत्तर में **कैरेबियन सागर,** और दक्षिण में **प्रशांत महासागर** है।

भौगोलिक विशेषताएं:

- **प्रमुख नदियां:** पटुका और उलुआ।
- **सबसे ऊँची चोटी:** माउंट लास मिनास।